

Winter School on “Advance in Geospatial Techniques for Soil Resource Mapping and Management ” at ICAR-NBSS&LUP, Regional Centre Udaipur





द मेवाड़ पोस्ट

www.themewarpost.in

उदयपुर, बुधवार 5 फरवरी 2025

पृष्ठ 8

मृदा की सेहत सुधारने संबंधी तकनीक के अध्ययन के लिए 21 दिवसीय शिविर शुरू

द मेवाड़ पोस्ट, उदयपुर | मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन की नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल प्रशिक्षण बुधवार से उदयपुर व नागपुर केंद्रों पर आरंभ हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा घोषित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर व नागपुर में आयोजित प्रशिक्षण में देश भर के 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।



उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक थे। इस मौके पर डॉ. कर्नाटक ने कहा कि देश को आजाद हुए 78 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन किसान आज भी पारंपरिक विधियों से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं आजादी के बाद हाल के वर्षों में तकनीक के मामले में भारत ने अद्वितीय सफलता अर्जित की है इनमें ए-आई, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), डिजिटल मृदा मानचित्रण (डीएसएम) जैसे उपकरण एवं मृदा संसाधन प्रबंधन की जटिलताओं से निपटने के लिए स्थानिक डेटा का उपयोग करते हैं यह प्रौद्योगिकियाँ मृदा गुणों के

विस्तृत विश्लेषण, मृदा प्रक्रियाओं की मॉडलिंग और स्थाई भूमि प्रबंधन के लिए रणनीतियों के विकास को सुविधा प्रदान करती हैं।

उन्होंने कहा यद्यपि मैन्युअल से उच्च तकनीक के जरिए खेती करना किसान के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन हमारे देश के युवा वैज्ञानिकों की टीम दोनों में सामंजस्य बिटाने में सक्षम है इससे किसान व कृषि क्षेत्र में तरक्की सुनिश्चित है। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केंद्र नई दिल्ली के प्रमुख डॉ. जेपी शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम मृदा सर्वेक्षण, भू आकृति पहचान और भू स्थानिक उपकरणों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा।

मृदा की सेहत सुधारने का अध्ययन करेंगे वैज्ञानिक

उदयपुर (सच कहूँ न्यूज़)। मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन की नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) उदयपुर व नागपुर केन्द्रों पर आरंभ हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा घोषित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर व नागपुर में देशभर के 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। उदयपुर में आयोजित उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक थे। जबकि नागपुर केंद्र के समारोह में मुख्य अतिथि परिमल सिंह, परियोजना निदेशक, नानाजी देशमुख कृषी संजीवनी प्रकल्प (पोकरा) महाराष्ट्र थे। डॉ. कर्नाटक ने कहा कि किसान आज भी पारंपरिक विधियों



से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं। आजादी के बाद तकनीक के मामले में भारत ने अद्वितीय सफलता अर्जित की है इनमें ए-आई, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), डिजिटल मृदा मानचित्रण (डीएसएम) जैसे उपकरण एवं मृदा संसाधन प्रबंधन की जटिलताओं से निपटने के लिए स्थानिक डाटा का उपयोग करते हैं। उन्होंने कहा उच्च तकनीक के जरिए खेती करना किसान के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन युवा वैज्ञानिकों की टीम दोनों में सामंजस्य

बिठाने में सक्षम है। कार्यक्रम में पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केंद्र, नई दिल्ली के प्रमुख डॉ. जेपी शर्मा, जल संसाधन एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के प्रोफेसर शेखर मुद्दू, निदेशक नागपुर डॉ. एन.जी. पाटिल, प्रधान वैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर के डॉ. आर.पी. शर्मा, राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर के प्रमुख एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. वी.एल. मीना, डॉ. वृजेश यादव, वैज्ञानिक ने भी अपने विचार रखे।

पंजाब केसरी

भारत में 1.17 करोड़ से अधिक पाठक (IRS 2019)

PUNJAB KESARI, UDAIPUR

उदयपुर
 गुरुवार, 6 फरवरी, 2025
 तारुकार मह 24, विक्रमी सम्वत 2081
 वीर संवत् 2551
 वर्ष 1, अंक 282
 पृष्ठ 12+4+4(आर्कैडेशन)
 मूल्य ₹ 3.00

Thursday, 6 February 2025 www.punjabkesari.in उदयपुर • जयपुर • अजमेर • जोधपुर • जालंधर • पटौदा • सुधियाला • बडोडा • पानीपत • हिसार • रोहतक • बल्लभपुर • जम्मू से प्रकाशित ऑफिस : 9460186509, सफुलेसम : 8829900021

मृदा वैज्ञानिक करेंगे नवीनतम तकनीकों का अध्ययन

-21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) आरंभ

उदयपुर, 5 फरवरी (पंजाब केसरी) : राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो द्वारा 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ उदयपुर व नागपुर केंद्रों पर हुआ। इस प्रशिक्षण में देशभर के 50 से अधिक मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। उद्घाटन समारोह में महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के



कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक ने कहा कि उच्च तकनीक से कृषि क्षेत्र में तरक्की संभव है। उन्होंने एआई, रिमोट

सेंसिंग, जीआईएस व डिजिटल मृदा मानचित्रण जैसी तकनीकों के उपयोग को आवश्यक बताया। नागपुर केंद्र के

समारोह में परियोजना निदेशक परिमल सिंह मुख्य अतिथि रहे। प्रशिक्षण में मृदा संसाधन मानचित्रण, सर्वेक्षण तकनीकों, भू-स्थानिक उपकरणों व मिट्टी संरक्षण पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। वैज्ञानिक व विशेषज्ञ मृदा प्रबंधन की आधुनिक विधियों पर गहन चर्चा करेंगे। कार्यक्रम में डॉ. जे. पी. शर्मा, डॉ. एन. जी. पाटिल, प्रो. शेखर मुद्दू व अन्य वैज्ञानिकों ने मृदा प्रबंधन की महत्ता पर विचार रखे। आयोजन में विभिन्न राज्यों के मृदा वैज्ञानिक सहभागिता कर रहे हैं।

मृदा वैज्ञानिकों का शीत कालीन प्रशिक्षण शुरू

उदयपुर. मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन की नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) बुधवार से उदयपुर व नागपुर केन्द्रों पर शुरू हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर से राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र में आयोजित प्रशिक्षण में देश भर के 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। उदयपुर में उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक थे। समारोह में नागपुर केंद्र ऑनलाइन जुड़ा। मुख्य अतिथि डॉ. कर्नाटक ने कहा कि किसान आज भी पारंपरिक विधियों से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं। हाल के वर्षों में तकनीक के मामले में भारत ने अद्वितीय सफलता अर्जित की है। इनमें ए-आई, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), डिजिटल मृदा मानचित्रण (डीएसएम) जैसे उपकरण एवं मृदा संसाधन प्रबंधन

की जटिलताओं से निपटने के लिए स्थानिक डाटा का उपयोग करते हैं। कहा यद्यपि मैन्युअल से उच्च तकनीक के जरिए खेती करना किसान के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है, लेकिन हमारे देश के युवा वैज्ञानिकों की टीम दोनों में सामंजस्य बिटाने में सक्षम है। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केंद्र नई दिल्ली डॉ. जेपी शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम मृदा सर्वेक्षण, भू-आकृति पहचान और भू-स्थानिक उपकरणों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा। आरंभ में प्रधान वैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम प्रमुख डॉ. आरपी शर्मा ने बताया कि इस दीर्घकालिक प्रशिक्षण में न केवल राजस्थान बल्कि पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश और उड़ीसा से मृदा वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्र के मृदा संरचना व संरक्षण की दिशा में अपनाई जा रही तकनीक पर गहन विचार विमर्श करेंगे। डॉ. बीएल मीना ने अतिथियों का स्वागत किया। जबकि डॉ. वृजेश यादव ने धन्यवाद दिया।

11/2023

मृदा की सेहत सुधारने 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल आरंभ

■ चर्चा करेंगे देश भर के मृदा वैज्ञानिक

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन की नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) बुधवार से उदयपुर व नागपुर केन्द्रों पर आरंभ हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा घोषित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर व नागपुर में आयोजित प्रशिक्षण में देश भर के 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि एमपीयूएटी के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक, नागपुर केंद्र के मुख्य अतिथि परिमल सिंह थे।



डॉ. कर्नाटक ने कहा कि देश को आजाद हुए 78 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन किसान आज भी पारंपरिक विधियों से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जेपी शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम मृदा सर्वेक्षण, भू-आकृति पहचान और भू-स्थानिक उपकरणों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा। जल

संसाधन एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के प्रोफेसर शेखर मुद् ने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन में मूल्यवान कौशल प्राप्त होगा इससे वे मृदा आधारित विकास कार्यक्रमों और टिकाऊ भूमि प्रबंधन में प्रभावी रूप से योगदान करने में सक्षम होंगे।

इन विषयों पर होगा फोकस

- मृदा-भूमि रूप संबंधों और मृदा निर्माण पर उनके प्रभाव को समझना।
- आधुनिक मृदा सर्वेक्षण तकनीकों और भूमि संसाधन सूची विधियों की खोज।
- रिमोट सेंसिंग (आरएस), जीआईएस और डिजिटल मृदा मानचित्रण (डीएसएम) में ज्ञान बढ़ाना।
- गूगल अर्थ इंजन और भू-सांख्यिकी में व्यावहारिक प्रशिक्षण।
- मिट्टी और जल संरक्षण, भूमि उपयोग नियोजन और टिकाऊ प्रबंधन में भू-स्थानिक तकनीकों का प्रयोग।
- मृदा निर्माण के कारक और प्रक्रियाओं को समझना।

दैनिक पुकार

www.dainikpukar.com | 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) आरंभ | 2025

मृदा की सेहत सुधारने संबंधी तकनीक का अध्ययन व चर्चा करेंगे देश भर के वैज्ञानिक

21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) आरंभ

उदयपुर (पुकार)। मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन को नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) बुधवार से उदयपुर व नागपुर केन्द्रों पर आरंभ हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा चोषित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर व नागपुर में आयोजित प्रशिक्षण में देश भर के 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।

क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर में आयोजित उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक थे, जबकि नागपुर केंद्र के समारोह में मुख्य अतिथि

परिमल सिंह, परियोजना निदेशक, नानाजी देशमुख कृषि संजीवन प्रकल्प (पोकरा) महाराष्ट्र थैसमारोहमें नागपुर केंद्र अंनलाइन जुड़ा।

डॉ. कर्नाटक ने कहा कि देश को आनाम हूर 78 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन किसान आज भी पारंपरिक विधियों से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं आजादी के बाद हल के वर्षों में तकनीक के मामले में भारत ने अद्वितीय सफलता अर्जित की है इनमें ए-आई, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), डिजिटल मृदा मानचित्रण (डीएसएम) जैसे उपकरण एवं मृदा संसाधन प्रबंधन की जटिलताओं से निपटने के लिए स्थानिक डेटा का उपयोग करते हैं यह प्रौद्योगिकियों मृदा गुणों के विस्तृत विश्लेषण, मृदा प्रक्रियाओं की

मॉडलिंग और स्थाई भूमि प्रबंधन के लिए रणनीतियों के विकास को सुविधा प्रदान करती है उन्होंने कहा यद्यपि मैन्युअल से उच्च तकनीक के जरिए खेती करना किसान के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन हमारे देश के युवा वैज्ञानिकों को टीम दोनों में समंजस्य विद्यने में सक्षम है इससे किसान व कृषि क्षेत्र में तरकीब सुनिश्चित है। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केंद्र, नई दिल्ली के प्रमुख डॉ. जेपी शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम मृदा सर्वेक्षण, भू अकृति पहचान और भू स्थानिक उपकरणों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा। जल संसाधन एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के प्रोफेसर शेखर मूदू ने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन में मूल्यवान कौशल प्राप्त होगा इससे

वे मृदा आधारित विकास कार्यक्रमों और टिकाऊ भूमि प्रबंधन में प्रभावी रूप से योगदान करने में सक्षम होंगे। निदेशक नागपुर डॉ. एन. जी. पाटिल ने कहा कि मृदा या मिट्टी एक अपरिहार्य प्राकृतिक संसाधन है जो स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को आधार प्रदान करता है साथ ही कृषि, वानिकी और पर्यावरणीय स्थिरता की आधारशिला के रूप में कार्य करता है। आरंभ में प्रधान वैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर के डॉ. आर. पी. शर्मा ने बताया कि इस दीर्घकालिक प्रशिक्षण में न केवल राजस्थान बल्कि पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश और उड़ीसा से मृदा वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्र के मृदा संरचना व संरक्षण की दिशा में अपनाई जा रही तकनीक पर गहन विचार विमर्श करेंगे।

राजस्थान का प्रमुख हिन्दी दैनिक

www.dainikpukar.com

अगम्य मीडिया

RAJHIN28008

BCI BUSINESS COUNCIL INDIA

21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) आरंभ

मृदा की सेहत सुधारने संबंधी तकनीक का अध्ययन व चर्चा करेंगे देश भर के मृदा वैज्ञानिक

उच्च तकनीक से ही कृषि क्षेत्र में तरक्की संभव : डॉ. कर्नाटक

अगम्य मीडिया

उदयपुर। मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन को नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) बुधवार से उदयपुर व नागपुर केन्द्रों पर आरंभ हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा चोषित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर व नागपुर में आयोजित प्रशिक्षण में देश भर के 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर में आयोजित उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक थे, जबकि नागपुर केंद्र के समारोह में मुख्य अतिथि श्री परिमल सिंह, परियोजना निदेशक, नानाजी देशमुख कृषि संजीवन प्रकल्प (पोकरा) महाराष्ट्र थैसमारोहमें नागपुर केंद्र अंनलाइन जुड़ा डॉ. कर्नाटक ने कहा कि देश को आनाम हूर 78 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन किसान आज भी पारंपरिक विधियों से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं आजादी के बाद हल के वर्षों में तकनीक के मामले में भारत ने अद्वितीय सफलता



अर्जित की है इनमें ए-आई, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), डिजिटल मृदा मानचित्रण (डीएसएम) जैसे उपकरण एवं मृदा संसाधन प्रबंधन की जटिलताओं से निपटने के लिए स्थानिक डेटा का उपयोग करते हैं यह प्रौद्योगिकियों मृदा गुणों के विस्तृत विश्लेषण, मृदा प्रक्रियाओं की मॉडलिंग और स्थाई भूमि प्रबंधन के लिए रणनीतियों के विकास को सुविधा प्रदान करती है उन्होंने कहा यद्यपि मैन्युअल से उच्च तकनीक के जरिए खेती करना किसान के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन हमारे देश के युवा वैज्ञानिकों को टीम दोनों में समंजस्य विद्यने में सक्षम है इससे किसान व कृषि क्षेत्र में तरक्की सुनिश्चित है विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केंद्र, नई दिल्ली के प्रमुख डॉ. जेपी शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम मृदा सर्वेक्षण, भू अकृति पहचान और भू स्थानिक उपकरणों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा। जल संसाधन एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के प्रोफेसर शेखर मूदू ने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन में मूल्यवान कौशल प्राप्त होगा इससे वे मृदा आधारित विकास कार्यक्रमों और टिकाऊ भूमि प्रबंधन में प्रभावी रूप से योगदान करने में सक्षम होंगे। निदेशक नागपुर डॉ. एन. जी. पाटिल ने कहा कि मृदा या मिट्टी एक अपरिहार्य प्राकृतिक संसाधन है जो स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को आधार प्रदान करता है साथ ही कृषि, वानिकी और पर्यावरणीय स्थिरता की आधारशिला के रूप में कार्य करता है। आरंभ में प्रधान वैज्ञानिक एवं पाठ्यक्रम प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर के डॉ. आर. पी. शर्मा ने बताया कि इस दीर्घकालिक प्रशिक्षण में न केवल राजस्थान बल्कि पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, तेलंगाना, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश और उड़ीसा से मृदा वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्र के मृदा संरचना व संरक्षण की दिशा में अपनाई जा रही तकनीक पर गहन विचार विमर्श करेंगे ताकि किसानों के लिए तैयार की जाने वाली पॉलिसी को नया दिशाबोध दिया जा सके। आरंभ में राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर के प्रमुख एवं प्रधान वैज्ञानिक डॉ. बी. एल. मीन ने अतिथियों को स्वागत किया जबकि डॉ. कुवेश चवला, वैज्ञानिक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दैनिक नवज्योति

Since 1936
उदयपुर, गुवागरी
6 फरवरी, 2025

आपका पता: पृष्ठ 12 | 2025-26

आपका पता: पृष्ठ 12 | 2025-26

पृष्ठ संख्या: 12 | पृष्ठ 2.00

मृदा की सेहत सुधारने 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल आरंभ

■ चर्चा करेंगे देश के मृदा वैज्ञानिक

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन की नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल (प्रशिक्षण) बुधवार से उदयपुर व नागपुर केन्द्रों पर आरंभ हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा घोषित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर में आयोजित प्रशिक्षण में देश भर के 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि एमपीयूएटी के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक, नागपुर केंद्र के मुख्य अतिथि परमल सिंह थे।



डॉ. कर्नाटक ने कहा कि देश को आजाद हुए 78 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन किसान आज भी पारंपरिक विधियों से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान वैज्ञानिक डॉ. जेपी शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम मृदा सर्वेक्षण, भू आकृति पहचान और भू स्थानिक उपकरणों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा। जल

संसाधन एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु के प्रोफेसर शेखर मूडू ने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन में मूल्यवान कौशल प्राप्त होगा। इससे वे मृदा आधारित विकास कार्यक्रमों और टिकाऊ भूमि प्रबंधन में प्रभावी रूप से योगदान करने में सक्षम होंगे।

इन विषयों पर होगा फोकस

- मृदा-भूमि रूप संबंधों और मृदा निर्माण पर उनके प्रभाव को समझना।
- आधुनिक मृदा सर्वेक्षण तकनीकों और भूमि संसाधन सूची विधियों की खोज।
- रिमोट सेंसिंग (आरएस), जीआईएस और डिजिटल मृदा मानचित्रण (डीएसएम) में ज्ञान बढ़ाना।
- गुणवत्ता अर्थ इंजन और भू-स्वस्थिकी में व्यावहारिक प्रशिक्षण।
- मिट्टी और जल संरक्षण, भूमि उपयोग नियोजन और टिकाऊ प्रबंधन में भू-स्वस्थिक तकनीकों का प्रयोग।
- मृदा निर्माण के कारक और प्रक्रियाओं को समझना।

सुविचार

अनवर सुलीत भी पढ़ रहे हैं।
दो दिन तक इंतजार करेंगे, तो
आप उन्हें खोजेंगे।

दैनिक भास्कर

आप पढ़ रहे हैं देश का सबसे विश्वसनीय और नंबर 1 अखबार

कुल पृष्ठ 46 रात्रस्थान मूल्य ₹ 5.00 | नंबर 27, अंक 248, पानकल

सेल्फ	78,27,128	₹	-312.53
प्रिंटर	87,46	₹	+0.30
संस्थापन (रिजिस्ट्रार)			
जाने का अनुभव			
अधिकार	मूल्य	(रुपय)	
उत्पन्न	241	5.1	12.0
दिल्ली	239	10.1	8.0
मुंबई	32.8	174	19.0

dainikbhaskar.com उदयपुर, गुवागरी, 6 फरवरी, 2025 माघ, शुक्ल पक्ष-9, 2081 12 रात्र | 61 संस्करण

एमपीयूएटी • मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन की नवीनतम तकनीकों पर 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण शुरू देशभर से 50 वैज्ञानिक हिस्सा ले रहे, अपने-अपने क्षेत्र की मृदा संरचना व संरक्षण में अपना रहे तकनीकों को साझा कर रहे

उदयपुर/महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एमपीयूएटी) में बुधवार को मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन की नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण शुरू हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की ओर से आयोजित प्रशिक्षण में देशभर से 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक हिस्सा ले रहे हैं। उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक थे। उन्होंने कहा कि देश को आजाद हुए 78 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन किसान आज भी पारंपरिक विधियों से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं। आजादी के बाद हाल

के वर्षों में तकनीक के मामले में भारत ने अद्वितीय सफलता अर्जित की है। इनमें एआई, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), डिजिटल मृदा मानचित्रण (डीएसएम) जैसे उपकरण एवं मृदा संसाधन प्रबंधन की जटिलताओं से निपटने के लिए स्थानिक डेटा का उपयोग करते हैं। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केंद्र, नई दिल्ली के प्रमुख डॉ. जेपी शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम मृदा सर्वेक्षण, भू-आकृति पहचान और भू स्थानिक उपकरणों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा। जल संसाधन एवं पर्यावरण इंजीनियरिंग, भारतीय विज्ञान संस्थान, बेंगलुरु

के प्रोफेसर शेखर मूडू ने कहा कि इस प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन में मूल्यवान कौशल प्राप्त होगा। इससे वे मृदा आधारित विकास कार्यक्रमों और टिकाऊ भूमि प्रबंधन में प्रभावी रूप से योगदान करने में सक्षम होंगे। पाठ्यक्रम प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र, उदयपुर के डॉ. अजीत शर्मा ने बताया कि इस शैक्षणिक प्रशिक्षण में न केवल राजस्थान, बल्कि पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश, तेलंगना, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश और ओडिशा से मृदा वैज्ञानिक अपने-अपने क्षेत्र के मृदा संरचना व संरक्षण को दिशा में अपनाई जा रही तकनीक पर महान विचार-विमर्श करेंगे।



बुधवार को एमपीयूएटी में आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते मृदा वैज्ञानिक।

प्रशिक्षण में इन चीजों पर रहेगा फोकस

- आधुनिक मृदा सर्वेक्षण तकनीकों और भूमि संसाधन सूची विधियों की खोज।
- रिमोट सेंसिंग (आरएस) का प्रयोग।
- मृदा निर्माण के कारक और प्रक्रियाओं को समझना।
- जल धरण, मृदा प्रोफाइल अध्ययन व गुणों का अन्वलेकन।
- मिट्टी और जल संरक्षण, भूमि उपयोग नियोजन और टिकाऊ प्रबंधन में भू-स्वस्थिक तकनीकों का प्रयोग।
- मृदा निर्माण के कारक और प्रक्रियाओं को समझना।
- तकनीक को समझना।
- मृदा एवं जल संरक्षण और भूमि उपयोग नियोजन।



www.themewarpost.in

द मेवाड़ पोस्ट

उदयपुर, बुधवार 5 फरवरी 2025

पृष्ठ 8

मृदा की सेहत सुधारने संबंधी तकनीक के अध्ययन के लिए 21 दिवसीय शिविर शुरू

द मेवाड़ पोस्ट, उदयपुर | मृदा संसाधन मानचित्रण और प्रबंधन की नवीनतम तकनीक आधारित 21 दिवसीय शीतकालीन स्कूल प्रशिक्षण बुधवार से उदयपुर व नागपुर केन्द्रों पर आरंभ हुआ। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा घोषित राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो क्षेत्रीय केंद्र उदयपुर व नागपुर में आयोजित प्रशिक्षण में देश भर के 50 से ज्यादा मृदा वैज्ञानिक भाग ले रहे हैं।



उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अजीत कुमार कर्नाटक थे। इस मौके पर डॉ. कर्नाटक ने कहा कि देश को आजाद हुए 78 वर्ष हो चुके हैं, लेकिन किसान आज भी पारंपरिक विधियों से कृषि व इसके मूलाधार मृदा को संरक्षित किए हुए हैं आजादी के बाद हाल के वर्षों में तकनीक के मामले में भारत ने अद्वितीय सफलता अर्जित की है इनमें ए-आई, रिमोट सेंसिंग, भौगोलिक सूचना प्रणाली (जीआईएस), डिजिटल मृदा मानचित्रण(डीएसएम) जैसे उपकरण एवं मृदा संसाधन प्रबंधन की जटिलताओं से निपटने के लिए स्थानिक डाटा का उपयोग करते हैं यह प्रौद्योगिकियों मृदा गुणों के

विस्तृत विश्लेषण, मृदा प्रक्रियाओं की मॉडलिंग और स्थाई भूमि प्रबंधन के लिए रणनीतियों के विकास की सुविधा प्रदान करती हैं।

उन्होंने कहा यद्यपि मैन्युअल से उच्च तकनीक के जरिए खेती करना किसान के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है लेकिन हमारे देश के युवा वैज्ञानिकों की टीम दोनों में सामंजस्य बिटाने में सक्षम है इससे किसान व कृषि क्षेत्र में तरक्की सुनिश्चित है। विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रधान वैज्ञानिक एवं क्षेत्रीय केंद्र नई दिल्ली के प्रमुख डॉ. जेपी शर्मा ने कहा कि यह कार्यक्रम मृदा सर्वेक्षण, भू आकृति पहचान और भू स्थानिक उपकरणों के बारे में व्यावहारिक जानकारी प्रदान करेगा।